Section - B

7. रामचन्द्र शुक्ल के निबंधों की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। **(55)**
8. जयशंकर प्रसाद की काव्य - कला की समीक्षा कीजिए। **(55)**
9. 'सरोज स्मृति' कविता के भाव - पक्ष को प्रकाशित कीजिए। **(55)**
10. 'शेखर एक जीवनी' के आधार पर अज्ञेय की उपन्यास - कला की समीक्षा कीजिए। **(55)**
11. मुक्ति बोध की काव्य गत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। **(55)**

[Total No. of Printed Pages-4 **Roll No. _____**

1(CCE-M)4

Hindi - II

[28]

Time Allowed: 3 Hours *Maximum Marks-300*

INSTRUCTIONS

i) Answer must be written in Devanagari

ii) The number of marks carried by each question is indicated at the end of the question.

iii) The answer to each question or part there of should begin on a fresh page.

iv) Your answer should be precise and coherent

v) The part/parts of the same question must be answered together and should not be interposed between answers to other questions.

vi) ***Candidates should attempt Five questions. Question No.1 is compulsory.***

vii) If you encounter any typographical error, please read it as it appears in the text book.

viii) Candidates are in their own interest advised to go through the general instructions on the back side of the title page of the answer script for strict adherence.

ix) No continuation sheets shall be provided to any candidate under any circumstances.

x) *Candidates shall put a cross(X) on blank pages of answer script.*

xi) *No blank page be left in between answer to various questions.*

xii) *No programmable calculator is allowed.*

xiii) *No stencil(With different markings) is allowed.*

1. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं चार अवतरणों की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए: **(20×4=80)**

क) आइ न सकौ तुझ पै, सकूँ न तइ बुझा इ।
जियरा यौ ही ले हुगे, बिरह तपाइ तपाइ॥
पाँणी ही तें हिम भया, हिम ह्वै गया बिलाइ।
जो कुछ था सोइ भया, अब कछु कह्या न जाइ।

ख) जोग ठगोरी ब्रज न बिकै है।
यह ब्यौपार तिहारो ऊधो। ऐ सोई फिर ज है।
जापै लै आए हौं मधुकर ताके उर न समै है।
दाख छाड़ि कै कटुक नि बौरी को अपने मुख रवै है?
मूरी के पातन के केना को मुक्ताहल दै है।

ग) रतना न चमत्कृत हो बाले। अपने मन का उपकार करो,
मै एक पकड़ हूँ जो कहती ठहरो कुछ सोच-विचार करो।
अम्बरचुम्बो हिम श्रृंगों से कलख कोलाहल सान लिये,
विधुत की प्राण मयी धारा बहती जिसमें उन्माद लिये।

घ) तू सवा साल की जब कोमल,
पहचान रही ज्ञान में चपल,
माँ का मुख, हो चुम्बित क्षण - क्षण
भरती जीवन में नव जीव न
वह चरितपूर्ण कर गई चली,
तू नानी की गोद जा पली,

ङ) अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे
उठाने ही होंगे।
तोड़ने ही होंगे मठ और गढ़ सब।
पहुँचना होगा दुर्गम पहाड़ों के उस पार
तब कहीं देखने मिलेंगी बाँहें
जिस में कि प्रतिपल काँपता रहता
अरूण कमल एक।

च) कौन कहता है कि हम-तुम आदमी हैं। हम में आदमियत कहाँ? आदमी वह है, जिसके पास धन है, अख्तियार है, इलम है। हम लोग तो बैल हैं और जुतने के लिए पैदा हुए हैं। उस पार एक-दुसरे को देख नहीं सक्ता। एका का नाम नहीं। एक किसान दुसरे के खेत पर न चढ़े तो कोई जाफा कैसे करे, प्रेम तो संसार में उठ गया।

छ) संकल्प या प्रवृत्ति हो जाने पर बुराई से बचाने वाले तीन मनोविकार हैं- सात्विक वृत्तिवालों के लिए ग्लानि, राजसी वृत्ति वालों के लिए लज्जा और तामसी वृत्तिवालों के लिए भय।

ज) संधर्ष युद्ध देख ना चाहो तो मेरा हृदय फाड़कर देखो मालविका! आशा-निराशा का युद्ध, भावों और अभावों का द्वन्द्व। लोई कमी नहीं, फिर भी न जाने कौन मेरी सम्पूर्ण सूची में रिक्त चिह्न लगा देता है।

Section - A

2. कबीर के सामा जिक पक्ष पर सोदाहरण प्रकाश डालिए। **(55)**

3. सूरदास की भक्ति भावना को स्पष्ट कीजिए। **(55)**

4. 'अंधेर नगरी' की राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में समीक्षा कीजिए। **(55)**

5. गोदान की औप न्यासिक तत्त्वों के आधार पर आलोचना कीजिए। **(55)**

6. जयशंकर प्रसाद की नाट्य कला का विवेचन कीजिए। **(55)**